कृप्याधारित क्षेत्र में महिला कर्मकारों की समस्यायें एवं अधिकार बनाम महिला सशक्तिकरण

डॉ0 किरान फात्मा
का. प्राचार्या,
सितारा बन्ना मैमौरियल पी.जी. कालिज, सिरसी

ईमेलः atlasmaryam598@gmail.com

सारांश

वर्तमान आधुनिक समाज में कृषि क्षेत्र में संलग्न महिलाओं को पूर्ण रूप से सक्षम एवं अधिकार सम्पन्न बनाने हेतु प्रयासों को और तीव्र करना होगा क्योंकि किसी भी देश की प्रगति इस बात पर निर्भर है कि उस देष की जनसंख्या शिक्षित प्रशिक्षित है अथवा नहीं और महिलाएँ देष की जनसंख्या रूपी संसाधन का आधा हिस्सा है। जबकि शिक्षित एवं प्रशिक्षित जनसंख्या किसी भी देश का सबसे शक्तिशाली संसाधन है। अतः कृषि आधारित उद्योगों एवं क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षित एवं प्रशिक्षित करने हेतु प्रयास किये जाने चाहिए यदि देखा जाये तो भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ के रूप में कृषि क्षेत्र को सदैव से ही देखा गया है और अर्थव्यवस्था को और अधिक प्रगतिवान करने हेतु महिलाओं की अनदेखी नहीं की जा सकती ताकि भविष्य में भारत प्रगति की ओर अग्रसर हो सके। कृषि क्षेत्र में महिलाओं को प्रशिक्षित एवं शिक्षित तथा अधिकार सम्पन्न बनाना अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है।

शिक्षित एवं प्रशिक्षित जनसंख्या किसी भी राष्ट्र की प्रगति में सर्वशक्तिशाली संसाधन है।

—डॉ किरन फात्मा''

प्रस्तावना

''यत्र नार्यस्यु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' वह सुन्दर वाक्य प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति का ज्ञान कराता है। लेकिन यह इतिहास की बात है। कालान्तर में विभिन्न कारणों से भारतीय समाज में स्त्रियों की पारिवारिक, सामाजिक स्थिति निरन्तर कमजोर होती गयी धीरे–ध ीरे भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिती दोयम दर्जे की या उससे भी दयनीय बनी रही। इस स्थिति में उन्नीसवीं सदी में बदलाव आना आरम्भ हुआ जब नव जागरण काल में भारतीय फ़लक पर अनेक सुधारवादी व्यक्ति सक्रिय हुए। बीसवी सदी में इस प्रक्रिया को ठोस धरातल और शक्ति आज़ादी के बाद मिली। संविधान में महिलाओं को समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई माना और

उन्हें पुरूषों के बराबर दर्जा तथा समान अधिकार प्रदान किये गये। लेकिन वास्तविक शक्ति आज भी महिलाओं से दूर ही है और यह ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में और भी दयनीय है। इस सन्दर्भ में में कृषि कार्यो में संलग्न महिलाओं की स्थिति तो और अधिक शोचनीय रही है। अतः महिलाओं को पूर्ण अधिकार सम्पन्न बनाने और समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने हेतु वर्ष 2001 को राष्ट्रीय महिला सशक्तीकरण वर्ष के रूप में मनानें का फैसला किया गया है। विगत दो दशकों में विशेषकर नौवीं एवं दसवीं पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान प्रयासों को तीव्र किया गया और राष्ट्र के विकास में महिला अधिकारिता को विशिष्ट लक्ष्य के रूप में प्रतिस्थापित किया गया है।

महिलायें किसी भी देश की आबादी का आधा हिस्सा हैं और उनकी अनदेखी करके वास्तविक विकास को मूर्त रूप नहीं किया जा सकता। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने महिलाओं को संविधान में प्रदत्त समानता का दर्जा देने के लिये लिंग भेद दुर करने के प्रयास शुरू किये गये हैं। महिला अधिकारिता तथा महिलाओं के विभिन्न संगठनों और उनके व्यापक अधिकार ताजा उदाहरण हैं। वर्तमान में हमारे देश प्रदेश एवं क्षेत्र में महिलाओं के सामाजिक आर्थिक विकास तथा राजनैतिक निर्णय देने के साथ–साथ उनके संवैधानिक एवं अन्य अधिकारों के प्रति जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इस व्यवस्था को जिससे फसलोंत्पादन और पशुपालन मुख्य हैं। पुरूषों के साथ–साथ महिलायें भी अपना भरपूर योगदान देती हैं। महिलायें कृषि क्षेत्र के हर प्रकार के विकास एवं वृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। कृषि क्षेत्र से जुड़ी महिलायें सदियों से गरीबी, अज्ञानता अंधविश्वास एवं घुटन भरी परम्पराओं तथा रीति–रिवाजों के वातावरण में मजबूरी भरा जीवन जीती आई हैं। सामाजिक बंधनों आर्थिक विपन्नता शोषण और उत्पीडन भरी उपेक्षा के बाबजूद महिलायें त्याग की अप्रतीम मूर्ति रही हैं। पशुपालन, मछली पालन और ग्रामीण क्षेत्र के अन्य कृपयाधारित उद्योगों में महिलाओं का योगदान पुरुषों से कहीं ज्यादा है। सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महिलाओं को अधिकार सम्पन्न बनाना और उन्हें राष्ट्रीय विकास की मुख्य धारा से जोड़ना बहुत जरूरी है। ग्रामीण महिलायें अवैतनिक कर्मचारी की तरहा समझी जाती हैं। जिसकी मेहनत और काम को आर्थिक नज़रिये से कभी नहीं देखा गया है। हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि कृषि क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं विस्तार के विभिन्न कार्यक्रमों का लाभ महिलाओं तक अवश्य पहुँचे जिससे वह अपने कार्यक्षेत्र में अधिक प्रभावकारी ढंग से काम कर सकें।

विश्व भर में सम्पादित किये जाने वाले कुल कृषि कार्य का लगभग 50 से 90 प्रतिशत भाग महिलाओं द्वारा किया जाता है एवं विश्व के 44 प्रतिशत खाद्यन्न का उत्पादन ही महिलायें करती हैं। पर्यावरण, ऊँर्जा, संरक्षण, आमदनी वृद्धि के स्रोत हैं। आवास, प्रबन्धन, रेशम पालन, मछली पालन, बागवानी, मधुमक्खी पालन, स्वराजगार योजनाओं के क्षेत्र में महिलाओं के प्रशिक्षण की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

भारत गाँवों का देश है और ग्रामीण अर्थ व्यवस्था कृषि पर पूर्ण रूपेण आधारित है। जैसा

कि उपर्युक्त विश्लेषणों से निष्कर्ष निकलता है कि कृषि क्षेत्र में महिलाओं का योगदान पुरूषों से किसी भी रूप में कम नहीं बल्कि कृषि के कुछ क्षेत्रों में तो महिलाओं का एकाधिकार है।

अतः हमें महिलाओं की समस्याओं पर विशेष ध्यान देना होगा मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों की भांति महिलाओं को भी अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त हो तभी स्त्री पुरुष सम्बन्धों में महिलाओं की परम्परागत, अधीनस्थ, निर्भरता पूर्ण और अधिकारों से वंचित सामाजिक स्थिति में सुधार हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. उमा चक्रवर्ती कुमकुम रॉय–रिसर्च पेपर– "Indian History Congress" "History of Women in Earth Indian".
2. एन.सी. बन्दोपाध्याय (1925, 1980) महिला कर्मकारों की आर्थिक सामाजिक दशाएँ।
3. ए.एन.बोस (1940) "Origin of slavery in Indian Aryan Economy".
4. एस.ए डाँगे "India from Probative communitism to slovery" नामक शोध पत्र।
5. किरान फात्मा, जनपद मुरादाबाद में महिलाओं की कृषि अर्थव्यवस्था में भूमिका–एक भौगोलिक विश्लेषण–2005
6. जे० भाग्यलक्षमी महिला अधिकारिता, बहुत कुछ करना शेष–योजना अगस्त 2004 पेज नं० **25**
7. ममता भारतीय– गरीबी उन्मूलन में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका–कुरुक्षेत्र, दिसम्बर 2004, पेज **31**